ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 51 कुल पृष्ठ-8 30 अगस्त से 5 सितम्बर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 आ.शु.-12

सुयोग्य चरित्रवान शिक्षक ही विद्यार्थियों का जीवन निर्माण करने में सक्षम हो सकते हैं

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देकर आदर्श समाज के निर्माण में करें सहयोग

– स्वामी आर्यवेश

शतपथ ब्राह्मण का यह वचन ''मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषो वेदः'' अर्थात् बालक के जीवन रूपी महल के निर्माण में माता–पिता तथा गुरु तीनों ही चतुर शिल्पकारों की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार राष्ट्र की उन्नति के तीन आधार स्तम्भ माने गये हैं। (1) आचार्य, (2) उपदेशक, (3) नेता। इन तीनों में आचार्य का स्थान सर्वप्रथम है। क्योंकि आचार्य से ही शिक्षा प्राप्त करके उपदेशक और नेताओं का निर्माण होता है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् माता, पिता, आचार्य अपने उत्तरदायित्व को भली भांति निभायें तभी बच्चों में संस्कार तथा जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। दुर्भाग्य से यदि माता–पिता शिक्षित नहीं हैं तो बच्चों में स्वाभाविक रूप से आये कुसंस्कारों को भी आचार्य या शिक्षक ही छुड़ाता है। अथर्ववेद के मंत्र में आचार्य शिष्य को सम्बोधन प्रदान कर रहा है।

यनेदसो मात क तच्छेषेपिता का ताच्च यत्।

उन्मोचन प्रभोचने उभे वाचा वदामि।। अथर्व. 5–30–4

जो तू माता के किए प्रमाद रूप पाप से और पिता के किये गये प्रमाद रूप पाप से विद्याध्ययन रूप जागृति प्राप्त नहीं कर सका, अभी तक सोया पड़ा है तो मैं आचार्य वाणी द्वारा तुझे सन्मार्ग पर लगाता हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि शिष्य रूपी अनगढ़ पत्थर को अपनी वाणी रूपी छेनी से तराश कर सुगढ़ रूप प्रदान करने वाले कलाकार को शिक्षक या आचार्य कहते हैं। माता–पिता के द्वारा बालक का आंतरिक व सामाजिक निर्माण होता है। लेकिन आचार्य या शिक्षक अपने उपदेशों द्वारा अपने अर्जित ज्ञान द्वारा बालक का बौद्धिक निर्माण करता है।

आज के छात्रों का बौद्धिक एवं व्यावहारिक ज्ञान देखकर शिक्षकों की प्रतिबद्धता और निष्ठा का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि शिक्षकों द्वारा छात्रों में ज्ञान का संचार नहीं किया जा रहा लेकिन आज के शिक्षक मात्र प्राविधिक कौशल को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं जो ज्ञान देने का पूर्ण उद्देश्य न होकर मात्र उसका एक भाग है। शिक्षक का उत्तरदायित्व होता है कि वह बालक का सर्वांगीण विकास करे जिससे बच्चे के अन्दर उच्च संस्कार पैदा हों तथा वह रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, संकीर्णताओं और दुर्व्यसनों से दूर रह सके तथा उसमें प्रेम सद्भाव एवं सहयोग की भावना का उदय कर दे। लेकिन क्या आज की शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक इस तरह का ज्ञान प्रदान कर पा रहे हैं? छात्रों में चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का अभाव जिस रफ्तार से बढ़ रहा है वह समाज के लिए चिन्ता का विषय बन गया है। हालात इतने खराब हो गये हैं कि बड़ी–बड़ी डिगरियाँ प्राप्त युवक नैतिकता और विवेक जैसे शब्दों को परिभाषित भी नहीं कर सकते तो वह युवक इन बातों को व्यवहार में कैसे उतार सकते हैं यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। इन सबका एक ही कारण नजर आता है वह है हमारी दूषित शिक्षा प्रणाली। अंग्रेज चले गये लेकिन मैकाले द्वारा प्रदत्त शिक्षा प्रणाली ने देश में पूरी तरह से पैर पसार लिये हैं। परिवार, समाज, राष्ट्र तथा उसके सदस्य वैसे ही होंगे जैसी वहाँ की शिक्षा प्रणाली होगी। जैसी शिक्षा वैसा समाज अथवा जैसे विद्यार्थी वैसे राजअधिकारी व कर्मचारी, क्योंकि आज शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य धन कमाना है। अधिकांश नागरिक देश पूजा के स्थान पर पेट पूजा को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझते हैं। अतः आज का पढ़ा–लिखा व्यक्ति अधिकारी या कर्मचारी अपने ज्ञान का प्रयोग समाज सेवा या देश सेवा में नहीं करता अपितु वह केवल कामचोरी, हेराफेरी व रिश्वतखोरी अथवा अन्य अनियमितताओं को करने में अपनी बुद्धि को लगाना जीवन का लक्ष्य समझता है। क्योंकि उसे बचपन से युवावस्था तक मिली शिक्षा में विज्ञानवादी, सेवाभावी, मानवतावादी या राष्ट्रवादी होने के संस्कार नहीं मिले। स्कूलों के अधिकतर शिक्षकों का पढ़ाने का उद्देश्य केवल मात्र धन कमाना होता है, क्योंकि वह भी उसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक बने हैं। अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली, देश को लोभवाद, कामुकतावाद, हिंसावाद, आतंकवाद तथा राष्ट्रद्रोह प्रदान कर रही है। आधुनिकता का लिवास ओढ़े हुए आज के महाविद्यालय लार्ड मैकाले की शिक्षा का धन्यवाद करने में गर्व का अनुभव करते हैं। आज की शिक्षा पाश्चात्यता की जंजीरों में जकड़ी हुई है। हमारा देश स्वतन्त्र तो अवश्य हो गया लेकिन शिक्षा अभी भी कैद है। उसमें भारतीयता के दर्शन नहीं होते। वैदिक संस्कारों को लोग भूलते जा रहे हैं। पहले बुरा काम करने मे लोग डरते थे अब दिल खोलकर खुलेआम बुरे काम करते हैं। दूसरों का अहित करने, अन्यों का गला काटकर अपने लिये आमोद–प्रमोद के साधन, कोठी, कार आदि जुटाने में नहीं चूकते उनका अपना लाभ होना चाहिए चाहे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र का कितना ही अहित क्यों न हो जाये इस बात की कोई चिन्ता उन्हें नहीं है। यह सब क्यों हो रहा है इसका एक ही कारण है कि अच्छी शिक्षा की कमी, वेदज्ञान व संस्कृति का ह्रास।

यदि समाज को संस्कारित करना है, राष्ट्र का निर्माण करना है तो विशेष रूप से शिक्षा को अपनी भारतीय संस्कृति, इतिहास व प्राचीन गौरव से जोड़ना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में जंगलों में एकान्त स्थान पर नगरों के कोलाहल से दूर रमणीक विद्याध्ययन केन्द्रों पर ज्ञानार्जन होता था जहाँ अन्य विद्याओं के साथ–साथ वेदों का ज्ञान दिया जाता था, चरित्र को सुधारा जाता था। बच्चों में चारित्रिक ज्ञान कूट–कूट कर भरा जाता था जीवन को संस्कारित करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता था और वहीं से निकले छात्र बड़े होकर ऋषि महर्षि राष्ट्रभक्त योद्धा, महापुरुष एवं विद्वान बनते थे। परिवार व राष्ट्र का नाम ऊँचा करते थे। उनका जीवन सत्य पथानुगामी होता था। परोपकार उनका धर्म होता था, वह सदा मानवता के लिए जीते थे, अधर्म से दूर रहते थे। भगवान राम, योगीराज श्रीकृष्ण, हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द तथा अन्य महापुरुष ऐसे हुए हैं जो अपनी महानता के कारण प्रसिद्ध हुए हैं। इसके विपरीत आज की शिक्षा में चरित्र का ज्ञान नहीं दिया जाता। वेदादि शास्त्रों के ज्ञान के अभाव में भ्रष्टाचारी, अनाचारी, दुराचारी व्यक्तियों का निर्माण हो रहा है जो राष्ट्र को निरन्तर अवनति के गर्त में धकेलते जा रहे हैं।

अब जब पूरी शिक्षा व्यवस्था ही दूषित है तो इन परिस्थितियों में हमारे शिक्षकों को अत्यधिक संयमित, चरित्रवान एवं प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है। चरमराई हुई तथा दूषित शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए न केवल शिक्षक बल्कि छात्रों एवं अभिभावकों को भी अपने चरित्र एवं सोच में बदलाव लाना होगा। शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर स्वस्थ रहते हुए उत्तम कार्य करने की इच्छा जगानी होगी न केवल अपने विषय में बल्कि दूसरे विषयों का भी व्यवहारिक ज्ञान रखना होगा एवं नैतिक एवं चारित्रिक गुणों को ऊपर लाना होगा। शिक्षकों को अपने कर्तव्यों के निर्वाह के लिए ईमानदारी से अत्यधिक परिश्रम करना होगा। क्योंकि एक सच्चा शिक्षक छात्रों में पुस्तकीय ज्ञान ही अवस्थित नहीं करता बल्कि उसके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्नशील रहता है। छात्रों को आत्मशून्य होने से बचाने के लिए शिक्षकों को दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ आगे आना होगा। लेकिन शिक्षकों को कर्त्तव्य परायण बनाने के लिए छात्रों को भी संयमित होना पड़ेगा। सबसे पहले तो उन्हें शिक्षकों के प्रति श्रद्धा बढ़ानी होगी, छात्रों को शिक्षकों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा। क्योंकि शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध जो दुनियाँ में सबसे श्रद्धेय और सम्माननीय सम्बन्ध है उसे पुनर्जीवित करने की अत्यधिक आवश्यकता है। शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि वह ब्रह्मचर्य सिद्ध आचारवान संस्कारवान तथा योग्य हों तभी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होगा और वह उन्नति के शिखर पर पहुँचेगा। क्योंकि विद्यार्थियों का जीवन कहीं बनता है तो गुरुकुलों या विद्यालयों में। सुयोग्य, चरित्रवान शिक्षकों तथा आचार्यों के द्वारा ही विद्यार्थियों का जीवन निर्माण ही, राष्ट्र निर्माण है।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली–2

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

शिक्षकों को समर्पित : शिक्षक दिवस

भारत भूमि पर अनेक विभूतियों ने अपने ज्ञान से हम सभी का मार्ग दर्शन किया है। उन्हीं मे से एक महान विभूति शिक्षाविद्, दार्शनिक, महानवक्ता एवं आस्थावान विचारक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाये तो समाज की अनेक बुराईयों को मिटाया जा सकता है।

ऐसी महान विभूति का जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाना हम सभी के लिए गौरव की बात है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के व्यक्तित्व का ही असर था कि 1952 में आपके लिए संविधान के अन्तर्गत उपराष्ट्रपति का पद सृजित किया गया। स्वतंत्र भारत के पहले उपराष्ट्रपति जब 1962 में राष्ट्रपति बने तब कुछ शिष्यों ने एवं प्रशंसकों ने आपसे निवेदन किया कि वे उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाना चाहते हैं। तब डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने कहा कि मेरे जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने से मैं अपने आपको गौरवान्वित महसूस करूँगा। तभी से 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

5 सितम्बर को एक बार फिर सारा देश भारत के पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन का जन्मदिवस 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है। महर्षि अरविन्द ने शिक्षकों के सम्बन्ध में कहा है कि ''शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींचकर उन्हें शक्ति में निर्मित करते हैं।'' 'महर्षि अरविन्द का मानना था कि किसी राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस देश के शिक्षक हाते हैं। इस प्रकार एक विकसित, समृद्ध और खुशहाल देश व विश्व के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका ही सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण होती है। आज कोई भी बालक 2–3 वर्ष की अवस्था में विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने के लिए आता है तो इस बचपन की अवस्था में बालक का मन–मस्तिष्क एक कोरे कागज के समान होता है। इस कोरे कागज रूपी मन–मस्तिष्क में विद्यालयों के शिक्षकों के द्वारा शिक्षा के माध्यम से शुरुआत के 5–6 वर्षों में दिये गये संस्कार एवं गुण उनके सम्पूर्ण जीवन को सुन्दर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराश कर उसे
रूप दे देता है। किसी भ
तराशने में शिल्पकार की
होती है। इसी प्रकार एक
होता है जो गीली मिट्टी
प्रदान कर उसे समाज के
अथवा एक सुन्दर मूर्ति का
शिल्पकार तथा कुम्हार द्वारा
एवं बर्तन सुन्दर नहीं है तो
रखे जायेंगे उस स्थान को
स्वरूप ही प्रदान करेंगे। शि
की भांति ही स्कूलों एवं उस
प्रथम दायित्व एवं कर्त्तव्य है
अध्ययनरत सभी बच्चों को इ
और सजायें कि उनके द्वारा
सभी बच्चे 'विश्व का प्रकाश'

ोंकि आज के बच्चे ही कल
माज, देश तथा विश्व के
गे। इसलिए हमें प्रत्येक बच्चे
ा करने के लिए बपचन से ही
तविकताओं के आधार पर
क तथा आध्यात्मिक तीनों
र्ण एवं संतुलित शिक्षा देनी

बच्चे को सभी विषयों की
र उन्हें एक अच्छा डॉक्टर,
क एवं प्रशासनिक अधिकारी
उसे एक अच्छा इंसान भी
सामाजिक ज्ञान के अभाव में
ा समाज को सही दिशा देने
है तो वहीं दूसरी ओर
के अभाव में वह गलत निर्णय

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराश कर उसे सुन्दर आकृति का रूप दे देता है। किसी भी सुन्दर मूर्ति को तराशने में शिल्पकार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसी प्रकार एक अच्छा कुम्हार वही होता है जो गीली मिट्टी को सही आकार प्रदान कर उसे समाज के लिए उपयोगी बर्तन अथवा एक सुन्दर मूर्ति का रूप दे देता है। यदि शिल्पकार तथा कुम्हार द्वारा तैयार की गई मूर्ति एवं बर्तन सुन्दर नहीं है तो वह जिस स्थान पर रखे जायेंगे उस स्थान को और अधिक विकृत स्वरूप ही प्रदान करेंगे। शिल्पकार एवं कुम्हार की भांति ही स्कूलों एवं उसके शिक्षकों का यह प्रथम दायित्व एवं कर्त्तव्य है कि वह अपने यहाँ अध्ययनरत सभी बच्चों को इस प्रकार से संवारे और सजायें कि उनके द्वारा शिक्षित किये गये सभी बच्चे 'विश्व का प्रकाश' बनकर सारे विश्व को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर सकें। इस प्रकार शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भांति होता है जो प्रत्येक बालक को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप, एक सुन्दर आकृति का रूप प्रदान कर, उसे समाज का प्रकाश अथवा उसे विकृत रूप प्रदान कर 'समाज का अन्धकार' बना सकता है।

को अपनी रोशनी से प्रकाशित कर सकें। इस प्रकार शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भांति होता है जो प्रत्येक बालक को समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप, एक सुन्दर आकृति का रूप प्रदान कर, उसे समाज का प्रकाश अथवा उसे विकृत रूप प्रदान कर 'समाज का अन्धकार' बना सकता है। एक कुशल इंजीनियर वही होता है जो एक भव्य इमारत या भवन के निर्माण में उसकी नींव को सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसे मजबूत बनाता है और जब किसी भवन की नींव मजबूत हो तो फिर आप उसके ऊपर बनाये जाने वाले भवन को जितना चाहें उतना ऊँचा बना सकते हैं। और इस प्रकार से बनी हुई इमारत अन्य भवनों एवं इमारतों की अपेक्षा अधिक समय तक अपने अस्तित्व को बनाये रखने में सफल होती है। ठीक इसी प्रकार से हमें बच्चों के बारे में भी लेकर अपने साथ ही अपने परिवार, समाज, देश तथा विश्व को भी विनाश की ओर ले जाने का कारण भी बन जाता है। इसलिए प्रत्येक बच्चे को सर्वोत्तम भौतिक शिक्षा के साथ ही साथ उसे एक सभ्य समाज में रहने के लिए सर्वोत्तम सामाजिक शिक्षा तथा एक सुन्दर एवं सुरक्षित समाज के निर्माण के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने के लिए सर्वोत्तम आध्यात्मिक शिक्षा की भी आवश्यकता होती है।

शिक्षक एक सुन्दर, सुसभ्य एवं शांतिपूर्ण राष्ट्र व विश्व के निर्माता हैं। शिक्षकों को संसार के सारे बच्चों को एक सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य देने के लिए व सारे विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना के लिए बच्चों के कोमल मन–मस्तिष्क में भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद–51' के विचार रूपी बीज बचपन से ही बोने चाहिए। हमारा मानना है कि भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम' व 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद–51' रूपी बीज बोने के बाद उसे स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण व जलवायु प्रदान कर हम प्रत्येक बालक को विश्व नागरिक के रूप में तैयार कर सकते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्याओं, आनन्दमयी अभिव्यक्ति और हंसाने, गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को प्रेरित करने के साथ ही साथ उन्हें अच्छा मार्गदर्शन भी दिया करते थे। ये छात्रों को लगातार प्रेरित करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में उतारें। वे जिस विषय को पढ़ाते थे, पढ़ाने के पहले स्वयं उसका अच्छा अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी वे अपनी शैली की नवीनता से सरल और रोचक बना देते थे। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाये तो समाज की अनेक बुराईयों को मिटाया जा सकता है। उनका मानना था कि करूणा, प्रेम और श्रेष्ठ परम्पराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं। वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी व उद्देश्यपूर्ण शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती।

भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक गुणों से ओतप्रोत शिक्षकों के द्वारा ही समज में व्याप्त बुराईयों को समाप्त करके एक सुन्दर, सभ्य एवं सुसंस्कारित समाज का निर्माण किया जा सकता है। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन भी ऐसे ही महान शिक्षक थे जिन्होंने अपने मन, वचन और कर्म के द्वारा सारे समाज को बदलने की अद्भुत मिसाल प्रस्तुत की। वास्तव में ऐसे ही श्रेष्ठ शिक्षकों के मार्गदर्शन द्वारा इस धरती पर ईश्वरीय सभ्यता की स्थापना होगी। अतः आइये, शिक्षक दिवस के अवसर पर हम सभी डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को शत्–शत् नमन करते हुए उनकी शिक्षाओं, उनके आदर्शों एवं जीवन मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात् करके एक सुन्दर, सभ्य, संसंस्कारित एवं शांतिपूर्ण समाज के निर्माण के लिए प्रत्येक बालक को देश का एक सच्चा नागरिक बनायें।

Misrepresentation Of The Vedas : A Dangerous Fashion

A Rejoinder, By Prof. K.v. Paliwal Ph. D.

AN ARTICLE has appeared in 'Surya' entitled 'The Land of Kamasutra' that "the Vedas have many references to prostitution as organised and established institution" This magazine is edited by Mr. Maneka Gandhi, wife of famous Sanjaya Gandhi. I feel pity on the ignorance of the author for making such an irresponsible, inappropriate, unjust and absolutely baseless comment.

I am a regular and a serious reader of the Vedas since 1950 and have gone through not only once but several times their Hindi, Sanskrit and English translations and could not come across a single hymn in the Vedas supporting the prostitution. It is simply the author's biased imagination to malign the Vedas and establish prostitutions on their sacred name . Out of about seventeen thousand vedic hymns there is not a single even purporting prostitution.

It has become a fashion of the day to propagate and establish any social or religious evil on the name of Vedas because these Texts have been the sources of inspiration for millions of Indians since times immemorial. It is a different issue to justify prostitution on biological psychological and natural instincts bans of human beings. But it is highly unethical and unjust to establish it on the name of Vedas when they support not the least in any human of all the four Vedas. Being unaware of the theme and contents of the Vedas, the author need not drag the Vedas into this complex socio-economic universal evil in one form or the other.

The above statement can not be established and proved it by quoting the original references of the Vedas along with their translations. And if the writing fails to do so, it becomes his moral duty to confess his ignorance of the Vedic philosophies and apologize publicly for injuring the feelings of crores of people who regard these religious Holy scriptures as the Supreme Source of inspiration. It is a heinous crime and is against the basic laws of journalism to make a false propaganda about the fact which he does not know. It is most unfortunate to justify prostitution in the name of the Vedas.

Here are excerpts from a reply received from the writer of the article on the prostitution in the Vedas, which highlights the shallowness of the knowledge of the object.

"In all humility, let me admit that the source of my statement was not direct but second-hand. I had picked up this reference from an article appearing in one of the leading weeklies of Asia.

"However, I take this opportunity to personally apologize to you for having included a profane statement of doubtful overacuty in my article, and for injuring the sentiments of crores of people including yours".

"You would appreciate that one cannot conceivably refer back every statement one makes to the original source. None the less it is indeed surprising that the learned professor took as long as he did to detect this fallacy. Now I wish this was indicated to me earlier? My apologies for having caused you mental strain, which could well have been avoided if you had not taken the trouble to dig through all the four Vedas and its various translations to find whether a reference about prostitution did really exist.

"Sir, you are at liberty to correspond with me directly on this issue, may be there are still some "fashionable comments" which might have escaped your attention and consequently have remained unanswered.

With regards, Your sincerely, Sd. (Prashanta Misra).

महर्षि दयानन्द का शिक्षा सम्बन्धी विचार या दृष्टिकोण

– डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी

शिक्षा शब्द अत्यन्त व्यापक शब्द है। कुछ विचारकों ने शिक्षा को व्यक्ति में निहित शक्तियों तथा गुणों का स्फुटन एवं विकास माना है। जबकि अन्य विचारकों ने शिक्षा को सामाजिक आर्थिक गतिशीलता के प्रेरक तत्त्व के साथ ही आधुनिकीकरण का जनक माना है। कुछ अन्य विचारकों ने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का सहभागी कारक माना है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवनभर चलती रहती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से इसमें वृद्धि होती रहती है।

19वीं शताब्दी में शिक्षा में अनेक दोष आ गये थे। ब्रिटिश शासकों की नीति अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार करना था। लार्ड मैकाले द्वारा निर्धारित शिक्षा पद्धति ने देश की संस्कृति को हीनता प्रदान करके देशवासियों को पाश्चात्य शिक्षा का अनुगामी बनाया। पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीयों के स्वात्मबोध को नष्ट किया। इस शिक्षा का उद्देश्य ऐसे वर्ग का प्रादुर्भाव करना था जो रंग रूप में भारतीय होते हुए भी आचार–विचार बुद्धि और मन से अंग्रेज होने का दम भर सकें। पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार से भारतीय समाज अपने रीति–रिवाजों से दूर होकर पाश्चात्य संस्कृति के प्रति अग्रसर हो रहा था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विद्या को सर्वश्रेष्ठ माना है। उन्होंने लिखा है कि ''सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण–कर्म–स्वभाव रूपी आभूषणों को धारण कराना माता–पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।'' स्वामी जी को विश्वास था कि व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश एवं वेदभाष्य में अनेक बार शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित किया है एवं शिक्षा को मनुष्य का वास्तविक भूषण माना है। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर विस्तार से प्रकाश डाला है और शिक्षा प्रणाली के मूल तत्त्वों तथा पाठ्यक्रम का प्रतिपादन किया है। महर्षि के अनुसार जिस प्रकार शरीर की उन्नति में शुद्ध, पवित्र और पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है और उसी प्रकार आत्मिक और मानसिक उन्नति के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य के जीवन का निर्माण होता है। उत्तम शिक्षा से मनुष्य श्रेष्ठ और सच्चरित्र बनता है। स्वामी दयानन्द के अनुसार बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास प्रारम्भ में माता–पिता करते हैं। तत्पश्चात् आचार्य से बालक शिक्षा ग्रहण करके स्वयं बौद्धिक विकास करता है। उन्होंने बालक एवं बालिकाओं को समान शिक्षा, स्त्री एवं शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार दिया है।

स्वामी दयानन्द के अनुसार बालकों को जन्म से पांच वर्षों तक माता एवं छः से आठ वर्ष तक पिता को शिक्षा देनी चाहिए तथा नवें वर्ष के प्रारम्भ में उपनयन करके आचार्य के पास भेजना चाहिए। स्वामी जी ने मनुस्मृति के आधार पर लिखा है कि राजनियम और जाति नियम ऐसे होने चाहिए कि यदि व्यक्ति पांच वर्ष या आठ वर्ष के अधिक समय तक बालक–बालिकाओं को घर में रखते हैं, पाठशालाओं में नहीं भेजते तो उनके माता–पिता को दण्डित करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने शिक्षा प्रसार हेतु बालक एवं बालिकाओं को समय से आचार्यकुल में भेजने पर बल दिया है जिससे समाज में शिक्षा का प्रसार हो तथा बौद्धिक दृष्टि से भारतीय समाज सुसंगठित हो सके।

महर्षि दयानन्द सरस्वती मनुष्यमात्र को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करने के प्रबल पक्षपाती थे। स्वामी जी का मत था कि जन्म से सभी शूद्र होते हैं, शिक्षा एवं संस्कार द्वारा ही व्यक्ति द्विज बनता है। शिक्षण अवधि में विद्यार्थियों से ब्राह्मण, शूद्र, छूत–अछूत आदि किसी भी प्रकार का भेदभाव न करने का सुझाव दिया।

विद्यार्थियों को धार्मिक नैतिक बनाने हेतु महर्षि दयानन्द ब्रह्मचर्य को शिक्षा का अंग मानते थे तथा साथ ही वह सह शिक्षा के पक्षधर नहीं थे। इसलिए उन्होंने लड़के एवं लड़कियों को पृथक–पृथक शिक्षा व्यवस्था देने पर विचार व्यक्त किया। स्वामी जी के मत में कन्याओं की पाठशालाओं में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशालाओं में सब पुरुष होने चाहिए। ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणी को अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए जिससे वे उत्तम विद्या, शिक्षाशील स्वभाव और शरीर तथा आत्मा से बलयुक्त हो सकें। स्वामी जी ने स्त्री और पुरुषों के लिए पृथक–पृथक आर्य विद्यालयों को प्रत्येक स्थान पर स्थापित करने पर बल दिया। स्त्रियों की पाठशालाओं में अध्यापिका एवं प्रबन्ध स्त्रियों की हाथ में तथा पुरुष पाठशालाओं में पुरुषों द्वारा प्रबन्ध होना चाहिए।

19वीं शताब्दी में स्त्रियों की स्थिति शोचनीय थी। उनकी शिक्षा का प्रबन्ध नहीं था। स्वामी जी का विचार था कि प्राचीनकाल में विदुषी स्त्रियाँ राजसभाओं में बराबरी से जाती थीं तथा उन्हें पुरुषों के समकक्ष आदर दिया जाता था। 'स्त्री शूद्रों नाधीयाताम्' जैसी बहुप्रचलित, कपोल कल्पित श्रुतियों को महर्षि दयानन्द ने हेय माना है। उनका विश्वास था कि विद्वान् पति तथा अनपढ़ एवं असंस्कृत पत्नी गृहस्थी को सुचारू रूप से नहीं चला सकते। शिक्षित नारी ही अपने अधिकारों के प्रति मूलरूप से जागरूक रह सकती है। स्वामी जी ने वेदमंत्र 'इन्दम् मन्त्रम् पत्नी पठेत्' अर्थात् यह मंत्र पत्नी पढ़े से स्पष्ट होता है कि नारी को वेदमंत्र पढ़ने का अधिकार प्राप्त है। तत्कालीन समाज में व्याप्त बाल विवाह, बालिकावध, विधवाविवाह निषेध, परदा, दहेज आदि विभिन्न कुरीतियों को दूर करने एवं समाज में परिवर्तन के लिए स्त्रियों को सुशिक्षित होने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब स्त्रियाँ सुशिक्षित होंगी तभी उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होगा।

स्वामी दयानन्द के अनुसार ब्रह्मचर्य मनुष्य के जीवन की उन्नति की प्रथम सीढ़ी है। व्यक्ति अभ्युदय (वैभवपूर्ण सांसारिक जीवन) और निःश्रेयस (मोक्ष) के लिए तैयार होकर जीवन का कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। व्यक्ति धीरे–धीरे ब्रह्म प्राप्ति के लिए सिद्ध हो जाये यह ब्रह्मचर्य का उद्देश्य है और इसी कारण इसका नाम ब्रह्मचर्य रखा गया है। महाभारत में कहा गया है कि 'बुद्धि में मन के लय हो जाने पर सब वृत्तियों का निरोध करने वाली जो स्थिति है उसका नाम ब्रह्मविद्या है और वह ब्रह्मचर्य के पालन से उपलब्ध होती है।' स्वामी दयानन्द ब्रह्मचर्य पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के समर्थक थे। स्वामी जी के अनुसार कम से कम 25 वर्ष पुरुष एवं 16 वर्ष कन्या को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने समाज में धार्मिक एवं नैतिक मापदण्डों की रक्षा के लिए धार्मिक शिक्षा को समाज के लिए आवश्यक माना है। महर्षि ने धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा पर बल दिया। महर्षि दयानन्द ने अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि के लिए भारतीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना पर बल दिया। यह उनके जीवन में सम्भव न हो सका, परन्तु उसके पश्चात् आर्य समाज ने गुरुकुलों, वैदिक विद्यालयों की स्थापना की जिन्हें स्वामी जी के नाम से सम्बद्ध किया गया।

भारत में राष्ट्रीय शिक्षण के प्रवर्तक एवं उन्नायकों में स्वामी दयानन्द का प्रमुख स्थान है। उन्होंने प्राचीन संस्कृति पर बल देते हुए गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की आधारशिला रखी। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति भारतीय आदर्शों के अनुकूल थी। गुरुकुलीय पद्धति की तुलना कुछ सीमा तक वर्तमान काल में आवासीय शिक्षा पद्धति से की जा सकती है। गुरुकुलों का उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यावसायिक ज्ञान प्रदान करके स्वावलम्बी बनाना था अतः कृषि, औषधि विज्ञान तथा अन्य व्यवसायों को शिक्षा का प्रावधान भी किया गया। स्वामी दयानन्द ने ब्रह्मचर्य पालन, विद्यार्थियों के भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास हेतु शहरी जीवन की अपेक्षा उपयुक्त वातावरण पर ध्यान देने के साथ–साथ निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया। गुरुकुलीय पद्धति पर रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि ''गुरुकुल की स्थापना एक ऐसा प्रयास है जिससे हम अपनी शिक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप बना सकेंगे। गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति भारतीय आदर्शों के अनुकूल थी। आर्य समाज द्वारा कन्या गुरुकुलों की स्थापना की गई। कन्या गुरुकुलों में कन्याएँ आधुनिक ज्ञान, विज्ञान के साथ–साथ वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के अनुरूप उपयुक्त ज्ञान भी प्राप्त कर रही हैं। आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं में डी.ए.वी. कालेजों का सबसे अधिक योगदान रहा है। सरकारी पाठ्यक्रम के अतिरिक्त संस्कृत और मातृभाषा हिन्दी की शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है। आर्य समाज ने अनेक व्यवसायिक शिक्षा संस्थाएँ भी स्थापित की हैं। स्वामी दयानन्द के आदर्शों को पूरा करने के लिए आर्य समाज ने बाल विद्या मंदिरों की स्थापना की है जिसमें छोटे बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आर्य समाज द्वारा भारत में ही नहीं अपितु मारीशस, सूरीनाम, गुयाना, सिंगापुर, संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट–ब्रिटेन, फीजी वर्मा, केन्या, तन्जानिया, ट्रिनीडाड, युगाण्डा, मोजाम्बिक आदि देशों में आर्य समाज ने अनेक पाठशालाओं एवं कॉलेज की स्थापना की है। 100 से अधिक शिक्षण संस्थाएँ विदेशों में कार्यरत हैं। आर्य समाज स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली एवं वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार तथा अज्ञान के अन्धकार को दूर करने का प्रयास कर रहा है।

स्वामी दयानन्द केवल चिन्तक एवं दार्शनिक मात्र ही नहीं थे, बल्कि वे एक कर्मयोगी थे और उन्होंने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों को आर्य समाज के माध्यम से मूर्त स्वरूप प्रदान किया। पराधीन भारत के शैक्षणिक पुनर्निर्माण विशेष रूप से परम्परागत भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को नवीन शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से पुनर्जीवित करने का प्रयास भी स्वामी दयानन्द सरस्वती की सफलता का एक प्रमुख चिन्ह है। उन्होंने शैक्षणिक पुनः निर्माण के माध्यम से भारत में राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया को सशक्त आधार प्रदान किया, स्वामी जी ने सभी को समान शिक्षा, स्त्री शिक्षा, शिक्षा में भेदभाव न करने पर बल दिया। इस समय आर्य समाज द्वारा लगभग 5 हजार शिक्षण संस्थान भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में संलग्न है जो स्वामी दयानन्द के आदर्शों को पूरा करने में लगे हैं जो गौरव की बात है।

– बी–54, सूरजकुण्ड कालोनी, गोरखनाथ,
गोरखपुर–273015 (उ. प्र.), मो.:–9415592187

सामवेद यज्ञ सम्पन्न

मथुरा में केशवकुंज कालोनी के निवासी श्री मेधार्थी शर्मा ने अपनी 50 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर सामवेद यज्ञ क आयोजन दिनांक 21 से 25 अगस्त, 2018 तक आनन्द पूर्वक आत्म संतुष्टि के साथ किया।

यज्ञ के पुरोहित पद पर स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती विराजे। उन्होंने स्वयं वेद मंत्रों का सस्वर पाठ करके यज्ञ को सफल बनाया। स्वामी जी ने यज्ञावधि में वेद मन्त्रों का सविस्तार अर्थ करके मानव कल्याणनार्थ वेद की शिक्षाओं की उपयोगिता को मधुर वचनों द्वारा जन समूह को समझाया।

यज्ञोपरान्त स्वामी शान्तानन्द जी ने यज्ञ की उपयोगिता, सामाजिक जीवन की व्यवहारिकता, वैदिक धर्म और आर्य समाज के उद्देश्यों पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

भजनोपदेशक श्री धर्मवीर (धौलपुर) और ढोलक वादक श्री कौशल कुमार (अकबरपुर) मथुरा ने सारगर्भित भजनों के द्वारा जन समूह को सामाजिक बुराईयों, पाखण्डों और अन्धविश्वासों के छोड़ने की प्रेरणा देकर आनन्दित किया।

इस शुभ अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी (कौंकेरा) मथुरा, स्वामी योगानन्द जी–आगरा, स्वामी सत्यानन्द जी–मथुरा, पं. हरिशंकर शास्त्री, पं. नरेन्द्र शास्त्री और भारी मात्रा में जन समूह उपस्थित था।

यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त श्री मेधार्थी शर्मा ने आगन्तुकों को ससम्मान पूर्वक विदा किया। तदोपरान्त शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– मलखान सिंह, प्रधान आर्य समाज कृष्णनगर, मथुरा, उत्तर प्रदेश

प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. तुलसीराम आर्य दिवंगत

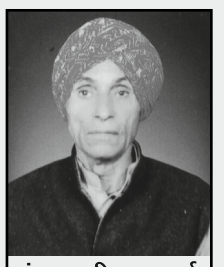

पं. तुलसीराम आर्य

आर्य जगत के महान समाजसेवी वेद प्रचार मण्डल मौलडबंद, दिल्ली के संस्थापक पं. तुलसीराम आर्य वेदोपदेशक ग्राम–बहीन, जिला–पलवल, हरियाणा का दिनांक 19 अगस्त, 2018 को निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। एशियन अस्पताल फरीदाबाद, हरियाणा में उनका इलाज चल रहा था। पण्डित जी का शांति यज्ञ श्री सुरेश शास्त्री जी ने दिनांक 24 अगस्त, 2018 को सम्पन्न कराया। पं. तुलसीराम आर्य, आर्य जगत के प्रख्यात वैदिक विद्वान, सिद्ध हस्तलेखक, ओजस्वी कवि, कुशल वक्ता, पं. नन्दलाल निर्भय के बड़े भाई थे। पं. तुलसीराम जी की धर्मपत्नी श्रीमती वीरवती आर्या लक्ष्मी स्वरूपा हैं। पं. तुलसीराम जी अपने पीछे 4 पुत्र तथा एक सुपुत्री छोड़ गये हैं। पण्डित जी की स्मृति में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में प्रसिद्ध आर्य विद्वान, कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी, श्री अभय कुमार शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य, श्री सोहन लाल, श्री राम प्रसाद सरपंच बहीन, श्री नेत्रपाल शास्त्री, श्री नारायण दत्त विधायक–बदरपुर, श्री केशवदेव वरिष्ठ अधिवक्ता, पलवल आदि ने पं. तुलसीराम जी को एक महामानव तथा कर्मयोगी बताया एवं उनके उच्च जीवन से प्रेरणा प्राप्त करने की अपील की। पं. तुलसीराम जी के परिवार ने इस अवसर पर कन्या गुरुकुल हसनपुर, पलवल को 51 हजार रुपये की राशि दान स्वरूप प्रदान की। श्रद्धांजलि सभा का समापन ब्रह्मभोज के साथ हुआ।

– सावित्री देवी आर्या, अध्यक्षा स्त्री आर्य समाज बहीन,
जिला–पलवल, हरियाणा

OPINION

The Tribune
CHANDIGARH | THURSDAY | 23 AUGUST 2018

The freedom to differ

Space for a rational and responsible debate on ideas and religion is shrinking

Swami Agnivesh
Arya Samaj Scholar And Social Activist

WATCH OUT: Any form of persecution or conversion is a threat to our society.

Religious freedom protects one from the need to toe the line drawn by muscular outfits and ideologies.

I am an Arya Samaji. I embraced sanyas six decades ago. I did so because I was convinced that spirituality is the light of life. But my idea of spirituality has been, from the beginning, different from its pietistic version. The goal of spirituality is to build a dharmic society, wherein all human beings can attain growth, freedom and dignity. If so, a world-denying, escapist religiosity is clearly unacceptable. So, I developed for myself the vision of Vedic socialism and applied spirituality.

In this, I have been inspired by the teachings of Maharshi Dayanand. The Ten principles of Arya Samaj, as formulated by him, have been my guiding light. I became deeply convinced that his endeavour to re-instate reason in the sphere of religion, and his relentless battle against religious obscurantism and superstitions of all kinds, is the way forward for India. I left academics and plunged into spiritual activism under the world-transforming vision of Dayanand, convinced that it was the cause for which I was to live, for the rest of my life.

So, my sanyas is a relentless pursuit to seek the light of truth and to make it prevail in the life of our country. The shaping discipline of my life is 'to doubt, to debate and, if need be, to dissent'. It is not an option for me, hence, to be coopted into anybody's myths, make-believe or partisan agenda. My spiritual discipline obliges me to satisfy my conscience that what I embrace is in full harmony with the light of truth. I have taken a stand against the indoctrination and communal conditioning by religions, using the arsenal of blind faith, of humans from infancy onwards. I have no doubt that this is an atrocity on freedom and is clearly violative of rights. Every form of conditioning, especially the conditioning that begins from birth, militates against the right to choose, which is basic to religious freedom. To me, freedom to choose where I should stand and which cause I need to support, based on a free and informed application of reason, is the essence of the religion I wish to practice and is, hence, the essence also of religious freedom.

Dayanand's campaigns against blind faith and religious obscurantism is an aspect of his commitment to make justice and human dignity prevail in our society. Merely attacking superstition is an academic exercise. I resist and question this evil as part of my commitment to make truth prevail. My reading of history convinces me that blind faith — and the suppression of free and rational thinking it brings about — is the main weapon that agents of injustice, exploitation and oppression use. My spiritual calling and conviction make it incumbent on me to resist this aberration.

I state the above, to alert my countrymen that the attacks launched on me, which can no longer be glossed over as stray instances, are assaults on the freedom of religion that I am entitled to under Article 25 of our Constitution. The right to practice, preach and propagate my religious vision does not mean, as I understand it, the right to convert anyone. It envisages the freedom to express my spiritual convictions in the public sphere. It protects me from the need to toe the line drawn by some muscular outfits and ideologies.

I see the present trend not only as a personal threat, but also as a dangerous social and national malady. As a sanyasi in the Arya Samaj tradition, I feel that the Samaj itself is under attack. In this respect two strategies are used. First, that of penetration and colonisation. RSS elements have penetrated the Arya Samaj in several areas and, with the help of weak and willing collaborators, hollowed out its innards. The crucial distinction between the RSS and the Arya Samaj stands blurred in such pockets.

The orchestrated physical attacks on me signal the inauguration of the second strategy: that of intimidation and coercion. The message is clear: the Arya Samaj will be allowed only a shadowy existence in the backyard of Hindu triumphalism as spearheaded by the Sangh Parivar. Any attempt to articulate the authentic spiritual vision of the Samaj will be crushed.

The RSS and the Arya Samaj are polar opposites. The one stands for authoritarian, top-down regimentation. It is a threat to social justice and the fundamental values of our Constitution. It scorns the universal vision of the Vedas and espouses a jingoistic and casteist idea of India, which is intolerant and narrow-minded. It replaces truth with violence, especially the violence of blind faith. It swears by hierarchical stratifications that discriminate against women, Dalits and adivasis. The Arya Samaj, in contrast, insists on the freedom of religion based on the primacy of reason. It has a creedal commitment to gender equality and social justice. It dreams of establishing a society of the noble (arya).

I can understand that my advocacies and interventions are provocative to the Parivar. But the hallmark of the democratic mindset is the freedom to differ in a rational and responsible manner. In our tradition, differences in ideas and beliefs are to be addressed through dialogues — shaastrarths — and not by violence and intimidation. We have always believed that the preference for violence is a sign of weakness, not of strength.

What are the options available to me at the fag end of my life? To be silenced by the agents of aggression or to be coopted by them into an agenda that I am totally convinced is a peril to the country? Or, to soldier on, for as long as I retain my breath, and uphold the relevance of the spiritual vision of Maharshi Dayanand to our times? As for me, this does not present a personal dilemma. It poses a challenge; a challenge significant for the country as a whole.

– दैनिक ट्रिब्यून से साभार

गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों ने किया प्रतिभा-प्रदर्शन

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आर्ष गुरुकुल नोएडा में विभिन्न वर्गों में अनेक प्रतियोगिताएँ 18 अगस्त 2018, शनिवार को आयोजित की गई। इस अवसर पर भारत के अनेक गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों ने भाग ग्रहण किया। जिसमें प्रतियोगिताएँ इस प्रकार थीं- संस्कृत-भाषण (कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्ग), अष्टाध्यायी सूत्रान्त्याक्षरी (कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्ग) तथा संस्कृत-गीत (कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्ग)। इस अवसर पर **गुरुकुल प्रभात आश्रम** के ब्रह्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग ग्रहण किया एवं सभी में प्रथम स्थान प्राप्त कर गुरुकुल का मान बढ़ाया।

इस अवसर पर अष्टाध्यायी सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में ब्र. शिवांश एवं ऋतेश तथा वरिष्ठ वर्ग में ब्र. अजय एवं ओमेन्द्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार संस्कृत भाषण प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में ब्र. राजदीप तथा वरिष्ठ वर्ग में ब्र. रोहित ने प्रथम स्थान प्राप्त कर गुरुकुल का गौरव बढ़ाया।

सभी प्रतिभागियों के गुरुकुल पहुँचने पर सभा का आयोजन कर गुरुकुलीय परम्परानुसार विजित विद्यार्थियों का अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के कुलाध्यक्ष परमपूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने अपने अशीर्वचन देते हुए कहा कि- प्रतियोगिताएँ आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करती हैं। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से अपने अन्दर परिष्कार करते हुए अपने ज्ञान का संवर्द्धन करते रहना चाहिए।

शराब : भ्रष्टाचार, अनाचार और आतंकवाद की जननी है

– अमृतलाल मालवीय

इस वर्तमान समय में मानव मानवता की खातिर परिवार समाज और देश को बचाना है तो सर्वप्रथम शासन तंत्र की ओर से इस दिशा में सक्षम, कारगर कार्यवाही की जाये, उपाय किये जावें। इसके लिए सर्वप्रथम तो देश में शराब बनाना बन्द किया जाये। सरकार का आबकारी विभाग अब केवल यही कार्य करे। देशी–विदेशी दोनों प्रकार के शराब कारखानें, गोरखधन्धे बन्द किये जावें। इसके लिये यदि देश में कोई सख्त कानून की आवयकता हो तो तत्काल बनाया जावे। अवैध शराब बनाने वालों पर सख्त कानूनी कार्यवाही के तहत उम्र कैद तथा फांसी तक की सजा का प्रावधान हो। विदेशी शराब पर अधिकतम कस्टम ड्यूटी लगाकर इसके आयात को नियंत्रित किया जाये।

आजकल देश–विदेश में भ्रष्टाचार, अनाचार और आतंकवाद आदि सामाजिक एवं राजनैतिक बुराईयों के मूल में नशा/शराब ही प्रमुख कारण है, जिसे हम आज तक नकार रहे हैं/झुठला रहे हैं। शराब एक विलासिता का पेय है। आज आम लोगों की धारणा है कि लोग गम, चिन्ता से मुक्त होने के लिए शराब पीते हैं। ऊँची, मंहगी शराब निश्चित ही इन बड़े घरानों के लिए यह एक दैनिक स्फूर्तिवर्धक टानिक, इसमें अन्य लोगों का कोई लेना–देना नहीं, किन्तु जब इसका प्रचलन न केवल मध्यम वर्ग अपितु समाज के सबसे निर्धन गरीब वर्ग में हो जाता है, तब यह चिन्ता का विषय है क्योंकि इसकी अनेकों बुराइयों के अलावा इससे गरीब/मध्यम लोगों की पारिवारिक आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। अपनी कमाई का आधा भाग ये पीने में ही खर्च कर देते हैं तब घर के शेष सदस्यों बच्चों की पढ़ाई–लिखाई, दवाई/रोटी, कपड़ा और मकान की क्या हालत होती है आप हम सब स्वयं ही देख रहे हैं। इस सामाजिक बुराई के लिए तो सर्वप्रथम शासन को ही उत्तरदायी ठहराया जाना उतिच होगा क्योंकि उसी के संरक्षण में शराब बनती है। विक्रय होती है/लाइसेंस दिये जाते हैं/शासन इससे राजस्व प्राप्त करता है। कहने को तो इसकी रोकथाम हेतु शराबबन्दी कानून बनाती है, पर क्या इससे शराब पीना/बनाना बन्द हो जाता है?कदापि नहीं, वरन इसका चोरी से प्रचलन बढ़ जाता है। दूसरा स्रोत इसका सरकारी चुनाव है। बिना शराब के आज तक देश में कोई भी चुनाव सम्पन्न नहीं हुआ। वोट पाने/वोट खरीदने का यही एकमात्र शस्त्र है जिसकी आजतक अनदेखी हो रही है। इसे रोकने में सरकारें नाकाम साबित हो रही हैं। तीसरा स्रोत शासन की कार्य प्रणाली का यह प्रमुख अंग है। इसके द्वारा सरकार में बैठे कर्मचारियों/अधिकारियों/मंत्रियों से बड़े से बड़ा काम कराना आसान हो जाता है। शराब पार्टी इसका प्रमुख माध्यम है। शराब के नशे में/शराब पीने के बाद उन अधिकारियों/कर्मचारियों से अपने पक्ष में आदेशों पर हस्ताक्षर कराना बिल्कुल आसान हो जाता है। जो काम रुपयों–पैसों से नहीं होगा वह काम यह शराब करा देती है। चौथा स्रोत सरकार का आबकारी विभाग है, जो सरकार को अधिक से अधिक राजस्व उपलब्ध कराने हेतु ठेकों की विधिवत नीलामी करना है। यह विभाग शराब नियंत्रण के लिए बना है किन्तु नियंत्रण के बजाय इससे शराब की दुकानों की निरन्तर वृद्धि हो रही है। नीलामी की राशि में बढ़ोत्तरी हो रही है। इस शराबखोरी की विभीषिका के कुछ उदाहरण/विवरण संक्षेप में निम्नानुसार प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

1. शराब नशा से मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। आंते जल जाती हैं, शराब पीने वालों की औसत उमर कम हो जाती है विश्व स्वास्थ्य संगठन की सर्वे रिपोर्ट से यह तथ्य साबित होता है।

2. मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोगों के परिवार शराब पीने से बर्बाद हो जाते हैं। लोग न तो अपने बच्चों को अच्छा पढ़ा सकते हैं और न ही लिखा सकते हैं। परिवार के अन्य सदस्य भी आर्थिक पीड़ा से त्रस्त होते हैं। वे गाली खाते हैं, कदाचरण के शिकार होते हैं।

3. महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार/बलात्कार, रेप आदि मामलों में अधिकतर शराबी व्यक्तियों को ही अपराधी पाया जाता है। ये लोग नशे की हालत में न केवल अपनी बहन, बेटियों, माँ को अपितु अबोध बालिकाओं तक को अपना शिकार बनाकर बलात्कार कर डालते हैं।

4. शराब से देश की संस्कृति नष्ट हो रही है। एक नशेड़ी से संस्कृति की क्या अपेक्षा की जा सकती है। वह तो एकदम नंगा–पशु बन जाता है। उसे जब अपनी माँ, बहन, बेटी की मर्यादा का ध्यान नहीं रहता तब उसे समाज देश की संस्कृति का कैसे ध्यान रहेगा?गाली, गलौज, मारपीट करना, चिल्लाना इन शराबियों की प्रमुख आदत होती है ऐसे में घर–परिवार का वातावरण कैसा रहता होगा, आप हम सब जानते हैं।

5. दुश्मनी, अनजाने में शराबखोरी अधिक कामयाब होती है। नशा कर मारपीट करना आसान हो जाता है।

6. कत्ल, हत्या आदि के मामलों में भी मूल कारण व्यक्ति का शराब के नशे में होना पाया जाता है, इस सत्य को कोई नकार नहीं सकता।

7. शराब पीकर अपराध करने पर सम्भवत: कानून में भी रियायत मिलती है। अक्सर शराबियों को अपराध करने पर थाने में लाया जाता है किन्तु उन्हें छोड़ दिया जाता है। उन पर कानूनी दफा नहीं लगाई जाती, यह कहकर कि इस व्यक्ति ने शराब की हालत में यह अपराध किया है और मामला रफा–दफा कर दिया जाता है। इस प्रकार नशा कर अपराध करना आसान हो जाता है।

8. रेल, मोटर, यातायात, दुर्घटनाओं में भी सम्बन्धित कर्मचारियों का नशे की हालत में होना पाया जाता है। वाहनों की टक्कर में 90 प्रतिशत मामलों में चालकों का नशे में होना पाया जाता है।

9. शराब के बिना शादियों की पार्टियाँ और नृत्य सम्भव नहीं यहाँ तक कि अन्य समारोहों/धार्मिक समारोहों तक में भी अब शराब और डांस आम बात हो गई है।

10. इस नशे की लत में पीढ़ी बरबाद हो रही है। बच्चे अपने शराबी पिता का ही अनुकरण कर शराब पीने लगे हैं। उनके लिए बाजार से शराब खरीदकर लाकर देते हैं। इंजीनियरिंग और उच्च शिक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी अब शराब और नशे के शिकार हो रहे हैं। स्कूली बच्चे भी स्मैक, गांजा, भांग का सेवन करने लगे हैं। कुछ नशीले गुटके भी ये विद्यार्थी खाने लगे हैं। रेलगाड़ियों में झाड़ू लगाने वाले बच्चे तथा कबाड़

बीनने वाले बच्चे सफेद नशे/चरस की लत में पड़कर रेल सफाई तथा अन्य निम्न स्तर के कार्य कर रहे हैं।

उपरोक्त विवरण तो एक बानगी ही है। शराब, नशा तो अब कलियुग की पहचान बन गया है। इसने अब तो हमारे धार्मिक/आराध्य स्थलों तक को नहीं छोड़ा है। अनेकों पुजारी, पण्डे, साधु नशे की लत में लिप्त हैं। क्या साधुओं को शराब पीना शोभा देता है?कदापि नहीं, किन्तु वे तो कहते हैं कि यह भोले का प्रसाद है। अब बताइये ऐसे साधुओं के बारे में आपकी क्या धारणा होगी?निश्चित ही इस शराब, नशे की मूल में वही धन, सम्पत्ति, रुपया, पैसा ही होता है, जो अनाधिकृत रूप से प्राप्त किया जाता है, कमाया जाता है। भ्रष्टाचार और काले धन या टैक्स चोरी आदि की कमाई में भी शराब विद्यमान रहती है। विश्व में फैल रहे आतंकवाद के मूल में भी बड़े पैमाने पर शराब, नशीले पदार्थों का सेवन होता है तथा इनकी तस्करी से प्राप्त धन से ही आतंकवाद संचालित होता है। जीवित रहता है। आफिस का एक छोटा सा बाबू या चपरासी भी दिनभर अपनी एक पौआ शराब के लिये पैसें की जुगाड़ में लगा रहता हैं, हालांकि यह आम बात नहीं है फिर भी इसे उदाहरण ही मान लें तो पर्याप्त होगा। इस सत्य को भी कभी नहीं नकारा जा सकता है कि यह सब पश्चिमी सभ्यता की ही देन है। प्रत्येक व्यक्ति शराब पीकर अंग्रेज बनना चाहता है, मौज मस्ती में डूबना चाहता है। लोगों की यह गलत धारणा है कि अंग्रेज लोग सभी नियमित शराब का सेवन करते हैं। पर आपने कभी यह सोचा कि वे तो धनाढ्य हैं, सम्पन्न हैं, पर हम हमारे घर में तो खाने को दाना नहीं, बच्चे, पत्नी, माता–पिता सब भूखे हैं और हम इस स्थिति में भी शराब पीकर न केवल अपने आपको वरन पूरे परिवार को बरबाद कर रहे हैं। इस समय सुसंस्कृत समाज में शराब से अधिक घातक और विषैला और कोई जहर नहीं हो सकता है।

अस्तु इस वर्तमान समय में मानव मानवता की खातिर परिवार समाज और देश को बचाना है तो सर्वप्रथम शासन तंत्र की ओर से इस दिशा में सक्षम, कारगर कार्यवाही की जाये, उपाय किये जावें। इसके लिए सर्वप्रथम तो देश में शराब बनाना बन्द किया जाये। सरकार का आबकारी विभाग अब केवल यही कार्य करे। देशी–विदेशी दोनों प्रकार के शराब कारखानें, गोरखधन्धे बन्द किये जावें। इसके लिये यदि देश में कोई सख्त कानून की आवयकता हो तो तत्काल बनाया जावे। अवैध शराब बनाने वालों पर सख्त कानूनी कार्यवाही के तहत उम्र कैद तथा फांसी तक की सजा का प्रावधान हो। विदेशी शराब पर अधिकतम कस्टम ड्यूटी लगाकर इसके आयात को नियंत्रित किया जाये। विदेशी शराब इतनी मंहगी हो कि आम आदमी उसे नहीं खरीद सके। अवैध देशी शराब बनाने वालें, पीने वालों को बिना जमानत गिरफ्तार कर कानूनी कार्यवाही की जाये। महुये का संग्रहण पूर्णत: गैर कानूनी किया जाये। शराबा के विकल्पों, ताड़ी या अन्य नशीले पेय पदार्थों तथा चरस, गांजा, भाँग आदि के व्यापार, उत्पादन तथा क्रय–विक्रय पूर्णत: प्रतिबन्धित, नियंत्रित किये जाये। इन सभी नशीले पदार्थों पेय पदार्थों को अनिवार्यत: आबकारी विभाग के तहत लाकर कार्यवाही की जाये। नशा किसी भी प्रकार का हो, वह मनुष्य समाज, देश तथा मानवता के लिए घातक, विनाशक ही होगा।

– इन्दौर, मध्य प्रदेश

केरल में आई जल प्रलय से मानवता हुई त्रस्त
पीड़ितों को राहत पहुँचाने के लिए आर्य समाज ने बढ़ाये कदम

केरल में 100 साल की सबसे बड़ी आपदा से जूझ रहे केरल वासियों को सहायता पहुँचाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने विस्तृत योजना बनाई है। वहाँ पर आम व्यक्तियों की सहायता करने के लिए सार्वदेशिक सभा की तरफ से एक टीम शीघ्र केरल जाने के लिए तैयार है। पीड़ितों को भोजन, नये वस्त्र, दवाईयाँ तथा अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए आर्यजनों से अपील है कि वे दिल खोलकर सहयोग प्रदान करें जिससे पीड़ित केरल वासियों को सहायता प्रदान की जा सके। अपना सहयोग चैक/ड्राफ्ट तथा धनादेश के द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम अति शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आप अपना सहयोग सीधे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के **बचत खाता संख्या : 60011010000 5689, IFSC Code :- BKID0006001, बैंक ऑफ इण्डिया, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2,** में भी जमा करा सकते हैं।

स्वास्थ्य चर्चा

एसिडिटी का कारण और निवारण

– वैद्य शुचि मित्रा

वैसे तो अम्लपित्त रोग कोई गम्भीर रोग नहीं है, पर रोग के गम्भीर कारणों की वजह से लोग हमेशा के लिए इस रोग के रोगी बन जाया करते हैं। अम्लपित्त (Acidity) रोग को एसिड डिस्पेपसिया, एसिड गेस्ट्राइटिस और हाइपर क्लोरहाइड्रिया के नाम से भी जाना जाता है। इस रोग का इतिहास बहुत ही पुराना है। वैसे तो आयुर्वेद के ग्रन्थ चरक संहिता व सुश्रुत संहिता में अम्लपित्त रोग का स्पष्ट रूप से जिक्र नहीं है। इस रोग का जिक्र, आयुर्वेदिक सबसे पहले अपनी संहिता में आचार्य कश्यप ने किया था। इसके पश्चात् अपने ग्रन्थ 'माधव निदान' में माधवाकार ने एक स्वतन्त्र रोग के रूप में अम्लपित्त रोग का पूर्ण रूप से व्याख्या किया है। लगातार बासी व तामसिक भोजन खाने से शरीर में बहुत ज्यादा अम्ल तथा पित्त का निर्माण होता है। इसी को अम्लपित्त कहते हैं। बदलती ऋतुओं से इस रोग का सीधा सम्बन्ध है। शरद् ऋतु और वर्षा ऋतु में यह रोग ज्यादा पैर पसारता है। इस रोग में रोगी के आमाशय में अम्ल और पित्त का निर्माण बहुत ज्यादा होने लगता है, जो इस रोग के जनक बन जाया करते हैं। तब गैस्ट्रिकम्यूकोसा में उत्तेजना पैदा होती है, जिससे हाइपर एसिडिटी का शरीर में निर्माण होता है। कई बार रोग की अवस्था में उचित उपचार न कराने की वजह से रोगी गैस्ट्रिक और ड्यूडिनल अल्सर का शिकार बन जाया करता है। रोग की गम्भीर अवस्था में रोगी को कैंसर भी हो सकता है।

लक्षण

- अम्लपित्त रोगी को थकान रहने लगती है।
- रोगी को पेट में भारीपन का एहसास होता रहता है।
- रोगी को उबकाई आती है। उसकी उबकाई में पीला, नीला, हरा या लाल रंग का पित्त निकलता है।
- रोगी को भोजन से अरुचि सी हो जाया करती है। उसे डकार आती रहती है।
- रोगी के पेट, छाती और गले में जलन रहने लगती है।
- रोगी के मुँह का स्वाद कसैला व कड़वा रहने लगता है। रोगी के मुँह में अम्लपित्त की वजह से छाले हो जाया करते हैं।
- रोगी के दांत भी खट्टे रहने लगते हैं।
- भूखा पेट रहने पर रोगी को जलन का एहसास होता है और भोजन कर लेने के पश्चात् जलन में कुछ वक्त के सिर आराम-सा पड़ जाया करता है।
- रोगी को सही नींद नहीं आती है, जिससे वह हर वक्त टेंशन में

रहने लगता है।

- रोगी की जीभ पर मैला पदार्थ जम जाया करता है। रोगी को गैस की प्रॉब्लम रहने लगती है। जिससे उसे अफारा, पेटदर्द और पेट फूलने की समस्या का सामना करना पड़ता है।
- रोगी के हाथ-पैरों आंखों व तलवों में जलन रहने लगती है।
- रोगी को मल-मूत्र त्यागते वक्त भी जलन की अनुभूति होती है।
- इस रोग के रोगी को बार-बार थूकने की आदत बन जाया करती है। रोगी की नाक से गर्म-गर्म सांसे निकलती हैं और उनके गुदा मार्ग से भी तीखी खट्टी और दुर्गन्ध युक्त गैसों का विसर्जन होता रहता है।

कारण

- गलत खान-पान से भी यह रोग शरीर में पनपता है।
- शराब, धूम्रपान व तम्बाकू के ज्यादा सेवन से यह रोग होता है।
- तले भुने व ज्यादा चटपटे खाद्य पदार्थों के सेवन से भी यह रोग शरीर में अपनी पैठ बनाने में सफल होता है।
- ब्रेड, जैम, जैली, फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक्स आदि के सेवन से भी यह रोग होता है।
- चाय, कॉफी, बिस्कुट व ज्यादा चीनी के प्रयोग से भी यह रोग उत्पन्न होता है।
- चिन्ता व मानसिक तनाव भी इस रोग को शरीर में पैदा करते हैं।
- खट्टे खाद्य पदार्थों, सिरका, खट्टी दही, खट्टी छाछ के सेवन से भी शरीर में अम्लपित्त रोग पैदा हो जाया करता है।
- ज्यादा मात्रा में बेसन व मैदा से बने खाद्य पदार्थों के सेवन से भी अम्लपित्त रोग हो जाया करता है।
- कम मात्रा में पानी पीने से और ज्यादा उपवास व्रत रखने से भी व्यक्ति इस रोग का शिकार हो जाया करता है।
- चॉकलेट, कुल्फी, डिब्बा बन्द खाद्य पदार्थ, क्रीम, आईस्क्रीम, टॉफियाँ रोज ज्यादा मात्रा में खाने से भी अम्लपित्त रोग होता है।
- पॉलिश किया चावल खाने से भी यह रोग हो जाया करता है।
- बिना चोकर के बारीक पिसे आटे की रोटियाँ खाने से भी यह रोग सताने लगता है।
- आजकल लोग एलोपैथिक दवाओं और एंटीबायोटिक दवाओं का खूब सेवन करते हैं। इस तरह की दवाओं के ज्यादा सेवन से भोजन नलिका और आमाशय पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जिससे व्यक्ति की आंतों में सूजन आ जाती है, घाव हो जाता है और शरीर में अम्ल ज्यादा बनने लगता है।
- जल्दी बिना चलाये भोजन से भी शरीर में अम्लपित्त रोग पैदा होता है।
- महिलाओं में गर्भाशय के दौरान यह रोग देखा गया है।
- अजीर्ण, पुरानी पेचिश, पुराने कब्ज, मन्दाग्नि, संग्रहणी, आमाशय में सूजन, आंतों में सूजन होने की वजह से भी आम्लपित्त रोग सता सकता है।
- दांतों के रोग, आंतों के रोग, पायरिया, लीवर की खराबी, तिल्ली की खराबी भी इस रोग को पैदा करती है।
- दूषित पानी पीने से भी यह रोग फैलता है।
- ठण्डे गर्म खाद्य पदार्थों का एक-दूसरे के ऊपर सेवन कर लेने से भी अम्लपित्त रोग हो जाता है।

जड़ी-बूटियों से रोग निवारण।

- त्रिफला या आंवले के चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से अम्लपित्त रोग ठीक हो जाता है।
- हरड़ के चूर्ण में थोड़ा सा शहद मिलाकर चाटना चाहिए।
- अम्लपित्त रोग होने पर रोगी के शरीर में कई तरह के विकार पैदा हो जाया करते हैं। इन विकारों से छुटकारा पाने के लिए काली मिर्च सौंठ और नीम की छाल को मिलाकर बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को सुबह शाम एक चम्मच की मात्रा में ताजे पानी से लेने से फायदा होता है।
- अगर इस रोग की वजह से पेट में दर्द की अनुभूति होती हो तो पीपल के वृक्ष की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से पेटदर्द में आराम मिलता है। काढ़े में गुड़ और सेंधा नमक डालना न भूलें।
- ताजा आंवले के गुदे में बारीक पिसी हुई मिश्री मिलाकर रखनी चाहिए।
- मुनक्का 10 ग्राम और सौंफ आधी मात्रा में लेकर दोनों को 100 मिली. पानी में भिगो दें। सुबह मसलकर छानकर पीने से अम्लपित्त में लाभ होता है।
- दाख, हरड़, बराबर-बराबर लें। इसमें दोनों में बराबर शक्कर मिला लें। सबको पीसकर एक-एक ग्राम की गोली बना लेने से अम्लपित्त, हृदय कंठ की प्यास, मन्दाग्नि का शमन होता है।
- पकी निबौली के तीन-चार दाने खाने से मन्दाग्नि में फायदा होता है।
- धनिया, सोंठ, शक्कर और नीम की सींक 6-6 ग्राम की मात्रा में लें। इसका क्वाथ बनाकर सुबह शाम पीने से पित्त की जलन, खट्टी डकारें, अपचन, ज्यादा प्यास मिटती है। पित्त स्वर में भी इसका सेवन लाभ पहुँचाता है।
- त्रिफला चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में दिन में दो-तीन बार पानी के साथ फांकने से एसिडिटी में लाभ होता है।

घरेलू उपचार

- ककड़ी या खीरे को बिना नमक के साथ खाने से अम्लपित्त रोगी ठीक होता है। ककड़ी या खीरा खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए।
- अगर वायु विकार की समस्या हो और खट्टी डकारें आ रही हों तो दो आलू आग में भून लें। इसमें जीरा, काली मिर्च, थोड़ा सा सेंधानमक मिला लें। अब इसमें थोड़ा सा नींबू का रस मिलाकर इसका सेवन करें।
- गाय के दूध में गुड़ मिलाकर पीने से खूब खुलकर पेशाब आयेगा जिससे अम्लता मिटने के साथ-साथ गर्मी व जलन भी मिट जायेगी।
- गुड़ के साथ जीरे का चूर्ण लेना चाहिए।
- धनिया और अदरक को बराबर की मात्रा में लेकर पानी के साथ सेवन करने से रोग में फायदा होता है।
- एसिडिटी की समस्या हो तो नारियल का पानी पीना चाहिए।
- काली मिर्च की चटनी के साथ काले चनों को खाना चाहिए।
- प्याज के रस में नींबू का रस मिला लें। इसके सेवन से पेशाब की जलन मिटती है।

(योग सन्देश से साभार)

बच्चों को मोबाइल देना एक ग्राम कोकेन देने के बराबर

– मैंडी सालगिरी, जानी-मानी एडिक्शन थैरेपिस्ट

- जो छोटे बच्चे मोबाइल से खेलते हैं, वो देर से बोलना शुरू करते हैं। टाइम मैगजीन में प्रकाशित रिपोर्ट
- लंबे समय तक मोबाइल का इस्तेमाल ब्रेन ट्यूमर का खतरा। एम्स की स्टडी
- मोबाइल बच्चों में ड्राई आइज की बड़ी वजह। द.कोरियाई वैज्ञानिक

जयपुर. अगर आप अपने बच्चे को मोबाइल या टैबलेट दे रहे हैं। या आप उनके सामने लगातार मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं...तो आपको इससे जुड़े खतरे भी पता होने चाहिए। क्या आपको पता है दुनिया के सबसे अमीर शख्सियतों में शुमार बिल गेट्स ने अपने बच्चों को 14 साल की उम्र तक मोबाइल नहीं दिया था। इसी तरह स्टीव जॉब्स ने 2011 में न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए इंटरव्यू में बताया था कि उन्होंने अपने बच्चों को कभी भी आईपैड इस्तेमाल नहीं करने दिया था। ये दो उदाहरण सिर्फ इसलिए हैं ताकि आप यह जान सकें कि मोबाइल दुनिया की सबसे जरूरी वस्तु नहीं है। दुनिया में मोबाइल के इस्तेमाल को लेकर भी कई रिसर्च हुई हैं, जिनके परिणाम चौंकाने वाले हैं। जो बच्चे स्मार्टफोन किसी भी रूप में इस्तेमाल करते हैं (वीडियो देखने-गाना सुनने।) वे अन्य बच्चों की तुलना में देर से बोलना शुरू करते हैं। छह माह से दो साल तक 900 बच्चों पर किए गए सर्वे में यह चौंकाने वाली स्थिति सामने आई है। हर 30 मिनट के स्क्रीन टाइम (मोबाइल इस्तेमाल) से ही 49% आसार बढ़ जाते हैं कि बच्चा देरी से बोलना शुरू करेगा। वहीं दुनिया की जानी-मानी एडिक्शन थैरेपिस्ट मैंडी सालगिरी ने तो यहां तक कहा है कि बच्चों को स्मार्टफोन देना उन्हें एक ग्राम कोकेन देने के बराबर है।

समाधान आप ही हैं...

मोबाइल हमारे घरों की दीवार बन रहा है। यह बच्चों को अपने ही दायरे में कैद करता जा रहा है। अगर आप चाहते है कि आपके बच्चे खुलकर खिलें तो उन्हें कोई कृत्रिम खुशी के बजाय अपना वक्त दें।

मोबाइल को नियंत्रित करिए...और बच्चों को इससे आज़ाद।

5 सितम्बर, शिक्षक दिवस पर विशेष

मानव एकता तथा विश्वशान्ति में
अध्यापक का योगदान

- डॉ. राजकुमार शाण्डिल्य

सम्पूर्ण चराचर जगत् ईश्वर की अद्वितीय रचना है। ईश्वर ने मनुष्य को सर्वाधिक बुद्धिमान् तथा रचनाशील बनाया है। वैदिक काल से ऋषियों ने वास्तविक आनन्द की अनुभूति तथा सुव्यवस्थित जीवन का साधन धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष नामक पुरुषार्थ चतुष्टय को माना है। इनका असंतुलन ही अशान्ति का मूल कारण है। ऐकान्तिक और आत्यन्तिक दुःख की निवृत्ति के लिए दर्शनशास्त्र का उदय हुआ है। यदि इन्द्रियोपभोग में ही वास्तविक सुख हो तो धनी तथा सामर्थ्य वाले कभी दुःख न पावे। लोभ की प्रवृत्ति मानसिक शान्ति में बाधक है। यह लोभ ही पापों की जड़ तथा अन्तहीन व्याधि है। मनुष्य के मन में विविध वस्तुओं तथा धनसंग्रह की प्रवृत्ति निरन्तर बनी रहती है और इसके लिए वह सद् असद् कर्मों का आकलन नहीं करता है। अतः अविवेक के कारण मानसिक अस्थिरता का शिकार होता है। आज चार्वाक दर्शन से प्रभावित मनुष्य अर्थ और काम की पूर्ति में ही प्रवृत्त है। युवावस्था, धन, स्वामित्व, विवेकशून्यता चारों का एक ही स्थान पर होना निश्चय ही अनर्थकर होता है। सन्तान परम्परा के लिए ग्राह्य काम आज विलास का साधन बन गया है। काम के क्षेत्र में अतिचार स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हानिकर है तथा पतन का कारण है। भोगवादियों को एड्स जैसे असाध्य रोग भी निगल रहे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में काम, क्रोध और लोभ को सब अनर्थों का मूल होने से नरक के द्वार कहा है। मनुष्य क्रमशः क्रोध, सम्मोह, स्मृतिभ्रम, बुद्धि नाश तथा विनाश की ओर जाता है।

अध्यापक बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान, योग, प्राणायाम के प्रति रुचि उत्पन्न करके संयम की शिक्षा दे क्योंकि मन नियन्त्रण से विश्व विजय होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, गुरु नानक देव जी - जैसे महा पुरुषों के जीवन से सम्बन्धित रोचक प्रसंगों से बच्चों के चरित्र का उत्थान करें, उन्हें उदारभावों से पुष्ट करें तथा संकीर्ण भावों से मुक्ति दिलाएँ। अध्यापक बच्चों में त्याग तथा स्नेह की भावना के विकास के लिए निःस्वार्थ भावना वाले परोपकाररत महान् व्यक्तियों के चरित्र से परिचित करवाए।

आज भौतिकवाद के कारण धनलिप्सा बढ़ी है। मनुष्य अति महत्त्वाकांक्षा, पदलोलुपता, धनसंग्रह की प्रवृत्ति तथा धार्मिक कट्टरता के कारण मानव के विनाश को भी हेय, तुच्छ तथा स्वगरिमा के प्रतिकूल नहीं मानता। वह विवेकशून्य होकर कण-कण में विद्यमान ईश्वर के अंश प्राणिजगत् को क्रोध तथा हिंसा का शिकार बना रहा है। वह धनलोलुपता तथा धार्मिक उन्माद के कारण निरीह प्राणियों में कलह तथा हिंसा फैलाकर स्वार्थ सिद्धि में लगा है।

वैज्ञानिक आविष्कारों से विश्व महाविनाश की ओर अग्रसर हुआ है। हिंसा से निपटने के लिए प्रति हिंसा अभियान। महात्मा गाँधी ने मानव कल्याण के लिए अहिंसा और शांति का सन्देश दिया। प्रतिहिंसा के भीषण परिणामों को ध्यान में रखकर प्रतिशोध की ज्वाला को विवेक के शीतल जल से शान्त करके मानवता का विनाश रोका जा सकता है। संकीर्ण राष्ट्रीयता भी विश्वशान्ति में बाधक है। बलात्कार, अपहरण, लूट, अधिक धन, धर्म, भाषा, क्षेत्र, ईर्ष्या और अहंकार सभी तत्व मानव एकता में बाधक हैं। आज बुद्धिवाद के कारण मानवीय भावनाएँ तुच्छ हो जाने से मनुष्य की मनुष्य से दूरी बढ़ गई है।

भारतीय समृद्ध संस्कृति तथा ज्ञान के अजस्र स्रोत ऋग्वेद में सम्पूर्ण विश्व में मानव एकता के लिए बहुत सुन्दर प्रार्थना की गई है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना भी इसकी महत्ता प्रदर्शित करती है। यहीं पर सभी विश्व नागरिकों को सुखी, नीरोग तथा कल्याणकारी देखने की कामना मानवतावाद का चरमबिन्दु है। हमारी संस्कृति 'सादा जीवन उच्च विचार' दार्शनिकता वाली है। मानव एकता, स्नेह तथा शान्ति की कामना से वैदिक साहित्य सम्पूर्ण विश्व के लिए आदर्श है। तैत्तिरीयोपनिषद् में शान्तिपाठ द्रष्टव्य है। यहाँ सूर्य, वरुण, अर्यमा तथा सर्वव्यापक विष्णु से कल्याण की कामना की है।

शिक्षित मनुष्य ही सभ्य तथा सुसंस्कृत कहलाता है। शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन नीरस तथा निरर्थक है। बच्चे की जन्मजात शक्तियों का समुचित विकास करके राष्ट्रनिर्माण में योगदान करने से अध्यापक राष्ट्रनिर्माता कहलाता है। अध्यापकवृन्द ही समाज को उचित दिशा देकर समाज की दशा सुधारता है। सतत अध्ययनशील रहकर ज्ञानार्जन करना अध्यापक का कर्त्तव्य है। अध्यापक शुद्ध आचरण के कारण आचार्य तथा ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान का अन्धकार दूर करने के कारण गुरु कहलाता है। गुरु के दोषों का आवरण आच्छादन करने वाला शिष्य छात्र कहलाता है। महाकवि कालिदास ने विद्वान् तथा ज्ञान को शिष्य तक पहुँचाने की कला दोनों गुणों से सम्पन्न शिक्षक को ही शिरोमणि माना है।

अध्यापक बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान, योग, प्राणायाम के प्रति रुचि उत्पन्न करके संयम की शिक्षा दे क्योंकि मन नियन्त्रण से विश्व विजय होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, गुरु नानक देव जी - जैसे महा पुरुषों के जीवन से सम्बन्धित रोचक प्रसंगों से बच्चों के चरित्र का उत्थान करें, उन्हें उदारभावों से पुष्ट करें तथा संकीर्ण भावों से मुक्ति दिलाएँ।

अध्यापक बच्चों में त्याग तथा स्नेह की भावना के विकास के लिए निःस्वार्थ भावना वाले परोपकाररत महान् व्यक्तियों के चरित्र से परिचित करवाए क्योंकि - तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् उपनिषदों की वाणी को जीवन का आदर्श वाक्य मानने वालों ने प्रचुर ख्याति अर्जित की है। महात्मा गाँधी जैसे महान् व्यक्तियों के चरित्र से सहनशीलता, सत्य तथा अहिंसा का विकास करें। बच्चों को वेद उपनिषद् तथा गीता के कर्मयोग के सिद्धान्त का महत्त्व समझाकर सतत कार्य के प्रति निष्ठा की प्रेरणा दें।

अध्यापक ही छात्रों को सत्य, धर्मनिष्ठा तथा सतत स्वाध्याय के लिए प्रेरित कर सकता है क्योंकि विद्या की महिमा सर्वविदित है। अध्यापक दैनिक घटनाओं पर छात्रों से चर्चा करके उन्हें चिन्तन के लिए प्रेरित कर सकता है। अध्यापक स्वयं कर्त्तव्य निष्ठा, सत्य, त्याग, विवेक, धार्मिक सहिष्णुता तथा सादगी का आदर्श स्थापित करके बच्चों को इन गुणों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करें तभी विश्व में मानव-एकता तथा शान्ति की स्थापना की जा सकती है। और मानवमात्र का कल्याण सम्भव होगा।

- रा. आ. व. मा. वि. करसान, चण्डीगढ़

सही शिक्षक की तलाश

— रूप नारायण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पुनर्निर्धारण हेतु ध्यान तो एक नहीं सभी पक्षों पर दिया जाता है पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाना चाहिए प्राथमिक शिक्षा यानी नींव के पत्थर पर। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि प्राथमिक शालाओं के पास भवन नहीं साज सामान नहीं, अध्यापक नहीं, और है तो योग्यतम नहीं। सब कुछ इतना औपचारिक एवं अप्रभावी है कि मात्र साक्षरता के आगे व्यक्तित्व के विकास की दिशा में कुछ भी तो नहीं किया जा सकता है सर्वांगीण विकास का लक्ष्य तो कोसों दूर रह जाता है।

दूसरी समस्या है हर स्तर पर सही शिक्षक के चयन की। सो पहली बात तो यह है योग्यतम और सही शिक्षक तो इस ओर आते ही नहीं यह तो उनके अंतिम चुनाव का व्यवसाय होता है। अच्छे वेतनमान और आकर्षक सेवा स्थितियों से निश्चय ही योग्यतम व्यक्ति इस ओर आएंगे। लेकिन सही शिक्षक जिन्हें अपने विषय पर अधिकार हो जिनकी संप्रेषण क्षमता प्रभावी हो और जो अपने शिष्यों के समक्ष एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में हो, ऐसे शिक्षक आएंगे कहां से? न तो यह अलादीन का चिराग दे सकेगा और ना ही यह कहीं से आयात हो सकेंगे। यह सब यहीं तैयार करने होंगे। हमारे शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों विद्यालयों में जो कि अभी तक बी.एड.एस.टी.सी., जे.बी.टी. का केवल थापा लगाते रहे हैं, केवल कुछ शिक्षण पद्धतियों शिक्षा समस्याओं शिक्षा सिद्धांततो एवम शिक्षा मनोविज्ञान की जानकारी देने के अतिरिक्त क्या देते हैं यह प्रशिक्षणालय है क्या वहां निष्ठावान प्रतिबद्ध संस्थासेवी समाजसेवी स्वाध्यायी छात्र प्रेमी सदाचारी एवं चैतन्य शिक्षक तैयार होते है। काश हमारे प्रशिक्षण संस्थान शिक्षकों में शिक्षकों को प्रस्थापित कर सकें उत्पाद की गुणवत्ता अपने औद्योगिक संस्थान पर ही निर्भर करती है।

यह गलत है कि शिक्षक प्रशिक्षण की समस्या के स्तर को बनाए रखने की समस्या है। प्रशिक्षण का स्तर है ही कहाँ? निश्चय ही प्रशिक्षण हेतु चयनित शिक्षकों की अभिरुचि उपलब्धि के कठोर परीक्षण की व्यवस्था करनी ही होगी और फिर होगी कठोर प्रशिक्षण की प्रक्रिया, जो निश्चय ही पर्याप्त अवधि के लिए होगी अगस्त से फरवरी तक के समय में शिक्षक को मात्र एक सामान्य परीक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है पर शिक्षण के लिए नहीं शिक्षक को जितना सामान्य एवं साधारण समझा जाता रहा है उतनी ही शिक्षा गिरती चली जा रही है। समर्पित शिक्षक यूं ही नहीं पैदा हो जाते हैं। आज हम भौतिक वस्तुओं के निर्माण में तो गुणवत्ता की ओर काफी ध्यान देने लगे हैं क्योंकि बाजार में तीब्र प्रतियोगिता है शिक्षण व्यवसाय में भी प्रतियोगिता है पर शिक्षण में नहीं है। यदि है तो थोड़ी बहुत रोजगार प्राप्त करने तक ही है, वह भी इसलिए की बेरोजगारी की समस्या है अन्यथा शिक्षण में प्रतियोगिता कहां? बिना पढ़ाए थोड़ा पढ़ाए अथवा गलत पढ़ाते हुए भी वेतन तो पाते ही रहते हैं, पदोन्नति भी हो जाती है। शिक्षा नीति में केवल वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नतियों को गलत माना गया है क्योंकि बूढ़ा होने पर बैल घोड़ा नहीं हो जाता है वह तो सच पूछो तो बूढ़ा बैल' हो जाता है। दीर्घ सेवा लाभ तो वेतन वृद्धि या चयनित वेतन श्रृंखला द्वारा दिया जाना न्यायसंगत है, पर गुणवत्ता को विशेष महत्व दिया जाए। गुणवत्ता को वरीयता दिया जाना तर्कसंगत तो है, पर गुणवत्ता कुछ हद तक व्यावहारिक धरातल पर संदेहास्पद भी है क्योंकि गुणवत्ता के नाम पर पक्षपात का खेल चालू हो जाएगा और बात घूम कर वहीं आ जाती है कि गंगा गंगोत्री पर ही गंदी है। जब हम शिक्षा एवं शिक्षक स्तर पर ही शाश्वत जीवन मूल्यों से बहुत दूर है तो और लोग तो होंगे ही। शिक्षा जीवन मूल्यों की ओर सचेष्ट क्यों नहीं है? काश ऐसा हो सके कि समाज को सही शिक्षक मिल सकें।

और कहां है सेवारत प्रशिक्षण? क्या शिक्षक की अकादमिक एवं शैक्षिक जागरूकता कभी मूल्यांकन हुआ है? क्या किसी निरीक्षक ने अथवा शिक्षा अधिकारी ने किसी शिक्षक की शैक्षिक चेतना अथवा अभिरुचि को जानना चाहा है उस पर गौर किया है क्या? किसे फुर्सत है यह सब देखने की। उनके निरीक्षण की रिपोर्ट एवं उनकी आवभगत में सीधा सम्बन्ध होता है।

सार रूप में, यही कह सकते हैं कि सही शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षणालयों के माध्यम से सही शिक्षक का चयन एवं प्रशिक्षण हो और यह प्रशिक्षण एक अनवरत प्रक्रिया हो। सही शिक्षा, सही प्रशिक्षण और सही शिक्षक का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है।

शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया जीवन मूल्यों एवं समग्र जीवन से मेल खाती हो, राजनैतिक हस्तक्षेप से मुक्त हो तथा उपेक्षित प्राथमिक शिक्षा को नम्बर एक का महत्त्व दिया जाये। शिक्षा सार्थक तभी हो सकती है, जब हमारे पाठ्यक्रम हमारे छात्रों को शारीरिक मानसिक दृष्टि से सक्षम बना सकें अन्यथा केवल बस्तों का बोझ बढ़ाने से नित नई पुस्तकें बदलते रहने से एवं आयोग बिठाने से कुछ नहीं होने का।

— ए–438 किशोर कुटीर वैशाली नगर जयपुर 302021 राजस्थान

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

देव यज्ञशील से प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः।।
—ऋ० ८/२/१८ ; अथर्व० २०/१८/३

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः।। देवता—इन्द्रः।। छन्दः—आर्षीगायत्री।।

विनय—आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता, किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एवं, बहुत–से अत्यन्त लाभकारी कार्यों को शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वञ्चित हो जाते हैं। अतः आलस्य करने वाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। या यूँ कहना चाहिए कि परमात्मा के देव आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार–यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं– इन द्वारा पूरा नियमन, अनुशासन ;क्पेबपचसपदम) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध और पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है– बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा मिलती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें। ये देव इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर भूल–चूक से बिल्कुल रहित होकर– कर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस सत्त्वगुण के बने हुए हैं जोकि तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किये हुए हैं, अतः आलस्य–प्रमाद करने वाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं?अतः देव उन्हें प्रमादों के लिए बार–बार दण्ड दे–देकर, उन्हें पुनः–पुनः ठोकरें मारते हुए जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगद्रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार–उसकी अनुकूलता में जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ–कर्म ही है। मनुष्य को इस यथार्थ कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊँचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस प्रकार का कोई भी कर्म करना इस संसार–यज्ञ के लिए सोम–रस का सेवन करना है। तनिक देखो–इन देवों के प्यारे लोगों को देखो– जो अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार–यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम–रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्त्तव्य में सदा जाग्रत्, कटिबद्ध संनद्ध रहते हुए देव–तुल्य जीवन बिता रहे हैं।

शब्दार्थ—देवाः=देव लोग सुन्वन्तम्=यज्ञकर्म करते हुए की इच्छन्ति=इच्छा करते हैं। न स्वप्नाय स्पृहयन्ति=निद्राशील, सुस्तों को नहीं चाहते। अतन्द्राः=स्वयं आलस्य–रहित ये देव–लोग प्रमादम्=गलती, भूल करने वाले का यन्ति=नियमन करते हैं।

साभार– 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

टिटौली में बेटी बचाओ अभियान द्वारा श्रावणी उपाकर्म व रक्षाबंधन पर्व मनाया गया
दो वर्ष पूर्व रक्षाबंधन पर लगाए गए पौधों का जन्मदिन भी मनाया गया

टिटौलीः– (रोहतक) आर्य समाज द्वारा संचालित बेटी बचाओ अभियान द्वारा आज जिले के गाँव टिटौली स्थित स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, आश्रम में वैदिक पर्व श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर यज्ञ किया गया। जिसको सन्यास आश्रम गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चन्द्रवेश सरस्वती ने सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर श्रावणी की विशेष आहुतियां प्रदान की गई। यज्ञ पर यज्ञोपवीत भी परिवर्तित किये गए।

यज्ञ के उपरान्त रक्षाबंधन का त्यौहार भी मनाया गया।

बेटी बचाओ अभियान द्वारा दो वर्ष पूर्व रक्षाबंधन के अवसर पर लगाये गए पौधों का दूसरा जन्मदिन भी मनाया गया। इस अवसर पर सभी पौधों की घास आदि हटा कर उनमे पानी व देशी खाद डाली गई।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी चन्द्रवेश सरस्वती ने कहा कि श्रावणी उपाकर्म वैदिक संस्कृति का एक तरह से आधार पर्व है। इस दिन से विद्या आरम्भ की जाती है गुरुकुलों में नए ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत प्रदान किये जाते हैं पुरानों के परिवर्तित किये जाते हैं।वेद सहित अन्य वैदिक ग्रंथो का स्वाध्याय इस अवसर पर प्रारम्भ होता है।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने आह्वान किया कि सभी बहनें जब अपने भाइयों को राखी बांधे तो उनसे एक संकल्प अवश्य लें। जिस तरह वो आपकी इज्जत व मान घर में करता है वैसी ही इज्जत व मान वो घर से बाहर जाने के बाद बाहर भी अन्य बहनों का करे। वो अन्यों की माँ ,बहन, बेटी का वैसे ही सम्मान करे जैसा वो खुद की माँ, बहन व बेटी के लिए चाहता है।आज हर माँ अपने बेटे व बहन अपने भाई को सुसंस्कारित बनाने का संकल्प लेंगी तभी ये पर्व व त्यौहार मनाने सार्थक होंगे।

कम से कम 5 वर्ष तक मनाये एक पौधे का जन्मदिन– कमांडो रामेश्वर श्योराण(कारगिल युद्ध के हीरो)

आज विशेष अतिथि के रूप में कारगिल युद्ध के हीरो व 26/11 ताज होटल में आतंकवादियों को मार गिराने वाले कमांडो रामेश्वर श्योराण आश्रम पहुंचे। उन्होंने कहा कि हमें फौजियों व पौधों का पूरा सम्मान करना चाहिए। क्योंकि आपके सुरक्षा फौजी बॉर्डर पर रहकर करता है तथा पौधे आपके आसपास के वातावरण को शुद्ध रखकर आपकी सुरक्षा करते हैं।

उन्होंने कहा कि हमें पौधे लगाकर छोड़ने नहीं चाहिये। बल्कि उनकी लगातार परवरिश करके उन्हें बड़ा करना चाहिए। यह तभी संभव है जब हम अपने परिवार की तरह उनका ख्याल रखेंगे। जिस तरह परिवार में बच्चे का जन्मदिन चाव के साथ मनाया जाता है, उसी तरह कम से कम 5 वर्ष तक एक पौधे का जन्मदिन मनाया जाए। 5 वर्ष तक परवरिश के बाद पौधे अपने आप चल पड़ते हैं उसके बाद उन्हें ज्यादा देखभाल की जरूरत नही होती।।

बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि आज हमें पौधों की रक्षा का संकल्प भी लेना चाहिए क्योंकि ये हमारी रक्षा ऑक्सीजन देकर लगातार कर रहे हैं। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान दीक्षेन्द्र आर्य, महामंत्री ऋषिराज शास्त्री, उप मंत्री अजयपाल आर्य, अंतरंग सदस्य राजबीर वशिष्ठ, राजबीर आर्य मोखरा, धर्मदेव, आदि ने कमांडो रामेश्वर को स्वामी दयानंद का चित्र भेंट करके सम्मान किया। इस अवसर बेटी बचाओ अभियान की कार्यकर्त्ता शशि आर्या(भैं), इंदु आर्या, रीमा आर्या, सुमन आर्या, विकाश आर्या, एकता आर्या, प्रीति आर्या,मीनू आर्या,रिंकू आर्या, सुषमा आर्या,पूजा आर्या व पूनम आर्या महम, आर्या आदि उपस्थित रहे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।